इलेक्ट्रॉनिक मीडिया:
भाषिक संस्कार एवं संस्कृति

डॉ. साकेत सहाय

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया: भाषिक संस्कार एवं संस्कृति

डॉ. साकेत सहाय

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2025

© डॉ. साकेत सहाय

पूजनीय माता श्रीमती कलावती सहाय

एवं

स्मृति-शेष पूज्य पिता श्री चतुर्भुज नाथ सहाय

के चरण-कमलों में

सादर समर्पित

आशीर्वचन

'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भाषिक संस्कार एवं संस्कृति' डॉ. साकेत सहाय की आधुनिक नजरिए से लिखी गई पुस्तक है। डॉ. साकेत ऊर्जावान व्यक्तित्व के धनी है और पुस्तक में भी इसे बखूबी देखा जा सकता है। पुस्तक में मुख्यतया इलेक्ट्रॉनिक मीडिया संस्कार, संस्कृति, भाषा एवं समाज के अंतरसंबंधों का व्याख्यात्मक विवेचन है जो भलीभाँति सुविचारित है तथा लेखक की ठोस विचारधारा को रेखांकित करती है । यहाँ सबसे महत्वपूर्ण बात है कि विषय को संपूर्णता में परखा गया है और उसके प्रत्येक पक्ष को उद्धरणों के माध्यम से विस्तारित रूप में परिपुष्ट किया गया है तथा इस माध्यम से विकसित हो रहे एक नई भाषिक संस्कृति की ओर भी इशारा किया गया है। वर्तमान में भाषा, कला, बाजार, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिदृश्य, सोशल मीडिया तथा समाज से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का जो नाभिनाल का संबंध है, वह इस कृतित्व में स्पष्टता के साथ दृष्टिगोचर होता है।

डॉ. साकेत सहाय से मेरा परिचय पत्रकारिता के एक विद्यार्थी के रूप में हुआ था। आप समय-समय पर अपने कार्य के संबंध में मुझे अवगत कराते रहे है। मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता है कि आपकी लगनशीलता, निष्ठा और उद्यमिता ने हमेशा से मुझे प्रभावित किया है।

पुस्तक का कलेवर विस्तृत है। आशा है यह विषय के तात्कालिक एवं गंभीर- दोनों प्रकार के पाठकों को रुचिकर लगेगी। हार्दिक शुभकामना सहित !

प्रो. (डॉ.) एम. एस. परमार

कुलपति

कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय,

रायपुर (छत्तीसगढ़)

शुभाशंसा

प्रस्तुत पुस्तक 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया: भाषिक संस्कार एवं संस्कृति' डॉ. साकेत सहाय की भावयित्री प्रतिभा का कार्यरूप में निरूपण है। भाषा एवं पत्रकारिता में विशेष रूचि के कारण साकेत सहाय ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया यथा, डीडी न्यूज एवं ऑनलाइन माध्यमों आदि में अनुभव ग्रहण किया और प्रतिष्ठित समाचार पत्रों में लेखों एवं राष्ट्रीय स्तर की परिचर्चाओं के माध्यम से सक्रियता दिखाई। पुस्तक को अंतिम रूप देते हुए इनकी प्रतिभा का निखार भी स्पष्ट रूप से सामने आया । मेरे छात्रों में डॉ. साकेत सहाय विशिष्ट स्थान रखते हैं। वे न केवल प्रतिभा बल्कि विनम्र स्वभाव के भी धनी है।

संस्कृति आदमी की पूर्णता में सहायक होती है तथा उसमें भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। पत्रकारिता भी समाज के प्रति मनुष्य की बड़ी जिम्मेवारी का प्रतिपालन करती नजर आती है। इस प्रकार संस्कृति, भाषा एवं पत्रकारिता में अन्योन्याश्रित संबंध है। कहीं संस्कृति के लिए पत्रकारिता तो कहीं पत्रकारिता के लिए संस्कृति कार्य करती है। इन दोनों के स्वरूप निर्धारण में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

डॉ. साकेत सहाय की यह पुस्तक वर्तमान इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता की दशा-दिशा, भाषा, संस्कार तथा उसकी वजह से विकसित हो रही एक नई संस्कृति का सूक्ष्म एवं बारीक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। बहुत ही परिश्रमपूर्वक इन्होंने अपने चिंतन एवं निष्कर्षों को इस पुस्तक में रखा है। पुस्तक में उपर्युक्त दिशा-निर्देशक तत्वों के स्वरूप के निर्धारण के साथ-

साथ उनके विशद् प्रभाव की गंभीर व्याख्या प्रस्तुत की गई है। पुस्तक का शीर्षक भली-भांति पुस्तक की अंतरवस्तु से न्याय करता है । पुस्तक का लक्ष्य वर्ग राजनीतिक एवं सामाजिक रूप से जागरूक पाठक हैं। पुस्तक में प्रत्येक पक्ष को अत्यंत सरल शब्दों में आबद्ध किया गया है तथा विषय को संपूर्णता में परखा गया है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पुस्तक आम व खास दोनों में समान रूप से लोकप्रिय होगी।

हार्दिक शुभकामना सहित,

प्रो. (डॉ.) बीरेन्द्र नारायण यादव

सदस्य, बिहार विधान परिषद्

सीनेट सदस्य, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (बिहार)

भूमिका

पिछले दो दशक में इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का भारत में बहुत तेज़ी से विकास हुआ है। जितनी तेज़ी से इस माध्यम का विकास हुआ उतनी ही तेज़ी से इसमें अपसंस्कृति का भी चलन बढ़ा क्योंकि इस माध्यम के लिए प्रशिक्षित लोगों की कमी महसूस हुई और जैसे भी लोग मिले उन्हें इस माध्यम में रोज़गार मिलता गया। इंटरनेट और सोशल मीडिया में लोगों की भागीदारी इस कदर बढ़ी कि जहाँ एक और तो इस माध्यम का लोकतांत्रिकरण हुआ लेकिन दूसरी ओर नैतिकता और मर्यादा जैसे शब्द ही बेमानी हो गए। भारतीय समाज के भाषिक संस्कार और संस्कृति को इससे जो ख़तरा हुआ उसकी पड़ताल आवश्यक हो गई। प्रस्तुत पुस्तक इसकी विवेचना प्रस्तुत करती है।

पिछले कुछ वर्षों में जिन विषयों पर सबसे अधिक चर्चा हुई है वह इस पुस्तक की आधार चिंताएँ हैं। टेलीविज़न हो या इंटरनेट की दुनिया दोनों में भाषा और संस्कृति की चिंता भारतीय समाज में रही है। पिछले तीन दशकों में भूमंडलीकरण और विशेषकर नई वैश्विक अर्थ-व्यवस्था ने समाज और मीडिया में जो परिवर्तन किए है वह सभी सकारात्मक नहीं रहे हैं। मीडिया के व्यावसायिकीकरण के दुष्प्रभाव के तौर पर ही हमें टी. आर. पी. और इंफोटेन्मेंट जैसी विपदाओं का सामना करना पड़ा है। मुझे खुशी है कि पुस्तक इन सभी पहलुओं को समेटती है।

मुझे पूरा विश्वास है कि डॉ. साकेत सहाय की यह पुस्तक 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया : भाषिक संस्कार एवं संस्कृति' प्रशिक्षुओं और विद्यार्थियों के लिए ही नहीं बल्कि इन विषयों में रुचि रखने वाले लोगों के लिए भी ज्ञानप्रद और रोचक होगी। इस पुस्तक में जिस प्रकार से लेखक ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, सोशल मीडिया, भाषा और संस्कृति को पिरोया है वह बहुत ही महत्वपूर्ण काम है और बहुत ही कठिन काम भी है लेकिन लेखक ऐसा कर पाया है यह किसी बड़ी उपलब्धि से कम नहीं है।

हेमंत जोशी

प्रोफेसर,

भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली

अनुक्रम

पुस्तक की बात एक नजर में	10
संचार माध्यम में इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता का स्थान एवं महत्व	59
संचार माध्यम एवं हिंदी का अंतरसंबंध	82
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया : प्रकार एवं स्वरूप	92
भारत में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया	122
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी	151
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और समाज	178
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया : सभ्यता और संस्कृति	220
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं लोकतंत्र	250
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं वैश्वीकरण	271
सोशल मीडिया : विविध पक्ष	302
परिशिष्ट	318

पुस्तक की बात एक नजर में

जनसंचार माध्यमों, विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर इतनी पुस्तकों के होते हुए भी एक और पुस्तक लिखने का उद्देश्य मेरे सामने यही था कि हम समाज निर्माण में संचार माध्यमों विशेष रूप से आधुनिक युग में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की भूमिका को जाँचे, समझे। इसलिए भी जाँचे, समझे क्योंकि संस्कृति किसी भी समाज के सशक्त निर्माण में महत्वपूर्ण रूप से सहायक होती है और उसमें भाषा एवं पत्रकारिता का व्यापक योगदान होता है।

देश, समाज व काल निर्माण में भाषा, संस्कृति एवं पत्रकारिता के इस घनिष्ठ संबंध को देखते हुए यह जरूरी है कि हम इस घनिष्ठ संबंध को और ज्यादा सार्थक एवं मजबूत करें। यह सर्वविदित है कि भाषा संस्कृति की सबसे बड़ी वाहक होती है। यदि हम सामान्य शब्दों में सांस्कृतिक नजरिए से इसे समझे तो हमारे पूर्वजों ने विचार और कर्म के क्षेत्र में जो कुछ भी श्रेष्ठ किया है, उस धरोहर का नाम ही संस्कृति है। इस संस्कृति निर्माण की प्रक्रिया में भाषा एवं संचार माध्यमों की भी भूमिका रही है।

किसी भी राष्ट्र का विकास एवं अस्तित्व उसकी संस्कृति पर आधारित होता है। भारत के संदर्भ में इसे बखूबी समझा जा सकता है। हमने अपनी भाषा, साहित्य और संस्कृति के बल पर ही पूरी दुनिया में अपना परचम लहराया है। इसमें संचार माध्यमों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। आज यदि गिरमिटिया मजदूरों ने अपनी सशक्त पहचान उन देशों में स्थापित की है तो इसमें उनकी सांस्कृतिक एवं भाषायी अभिरक्षा की निहित शक्ति छिपी हुई है। संस्कृति